T.D.C
~~First~~ Part - I ; Paper - II

Q. ट्यूडर संसद पर एक संक्षिप्त निबंध लिखें।

Ans → हेनरी VII के इंगलैण्ड के सिंहासन पर सिंहासनारूढ़ होने के समय संसद में लार्ड्स तथा कॉमन्स नामक दो सदन थे। संसद का राज्य की आर्थिक तथा वैधानिक व्यवस्थाओं पर अधिकार था। संसद प्रशासन विभाग के नियंत्रण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती थी। संसद की शक्ति काफी व्यापक थी और संसद के प्रभावशाली सामन्तों की राय सर्वोपरि थी। संसद की अनुमति के अभाव में सम्राट कोई कर नहीं लगा सकता था। संसद की अनुमति और राय से ही नियम निर्मित और लागू किए जाते थे। इस प्रकार ट्यूडर शासकों से पूर्व सम्राट पर कामन्स सभा तथा लार्ड्स सभा का प्रभुत्व था। परन्तु ट्यूडर संसद ट्यूडर बादशाहों के अधीन थी और बहुधा वह वही कार्य करती थी जो उसके शासकों को प्रिय थे।

1485 ई० में हेनरी सप्तम ने जब शासन संभाला, संसद की स्थिति अत्यन्त ही निर्बल थी। गुलाबों के युद्धों (Wars of Roses) ने देश में सामन्तों की संख्या क्षीण कर दी थी और सामन्त वर्ग पूर्वकाल में बादशाह पर नियन्त्रण ~~रखा~~ रखा करता था। सामन्तों की संख्या में इतनी कमी हो गई थी कि जब हेनरी सप्तम ने प्रथम संसद को बुलाया तो उस समय केवल 29 (उनतीस) सामन्तों को निमन्त्रण भेजा गया। हेनरी सप्तम की संसद में कुल 49 धर्माधिकारी थे। मठों के भंग हो जाने पर धर्माधिकारियों की संख्या में 28 अधिकारियों की कमी हो गई और शेष बादशाह ने स्वयं मनोनीत किए थे। इस प्रकार एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गई जिसमें लार्ड्स सभा बादशाह का विरोध करने में असमर्थ हो गया। उसकी स्थिति इस कारण और भी दुर्बल थी क्योंकि उन्हें देश की प्रजा का समर्थन प्राप्त नहीं था।

फलस्वरूप, लार्ड्स सभा के सदस्य ने देश के प्रशासन में कोई महत्वपूर्ण भाग नहीं लिया।

हेनरी सप्तम के शासन-काल में हाउस ऑफ कॉमन्स की स्थिति भी कमजोर थी। प्रादेशिक चुनाव क्षेत्रों में 40 शिलिंग भू-राजस्व देने की शर्त के कारण संसद सम्पूर्ण प्रजा का प्रतिनिधित्व नहीं करती थी। प्रदेश उत्तरोत्तर बादशाह के अथवा स्थानीय प्रभुत्व-व्यक्तियों के प्रभाव में आते जा रहे थे। उस काल में कामन्स सभा का सदस्य होना एक गर्व करने अथवा सम्मानवाली स्थिति नहीं होती थी अपितु एक भार माना जाता था। इंगलैण्ड के इतिहास में एक स्थान पर किसी व्यक्ति-विशेष को बादशाह द्वारा सीधा आदेश मिलता था कि वह कॉमन्स में, कार्बरलैण्ड का प्रतिनिधित्व करे। जब संसद के दोनों सदनों की यह स्थिति थी तो क्या आश्चर्य है कि ट्यूडर काल के आरम्भ में संसद बहुत ही निर्बल थी और बादशाह इस पर पूर्ण अधिकार जमा सकता था।

दूसरा मत यह है कि संसद कमजोर थी तो बादशाह भी कमजोर थी। हेनरी सप्तम इंगलैण्ड के सिंहासन पर साधिकार का दावा नहीं कर सकता था। कई अन्य व्यक्ति भी सिंहासन के दावेदार बन रहे थे। लंकास्टर वंश भी प्रतिशोध लेने की ताक में था। यदि हेनरी सप्तम ने एलिजाबेथ ऑफ यॉर्क से विवाह करके अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी, फिर भी उसे संसद की सहायता

28 SUNDAY

Scanned with CamScanner

इंगलैण्ड का इतिहास

MARCH Month-in-View 2021

की आवश्यकता पड़ी। राजसिंहासन पर उसके अभिषेक को संसद ने कानून बनाकर वैधानिकता प्रदान की थी। हेनरी सप्तम ने अपने शासनकाल के प्रथम भाग के 12 वर्षों में बहुत बार संसद बुलाई। यहाँ तक कि कोई भी वर्ष संसद का सत्र बुलाये बिना व्यतीत नहीं हुआ। किन्तु 1497 ई० के पश्चात उसने केवल एक बार ही संसद का सत्र बुलाया। इसका कारण यह था कि संसद के अनुदान के बिना ही बादशाह को अपने देश की आर्थिक स्थिति को व्यवस्थित करना आ गया था। उसने जुर्माने लगाकर, भेंट इत्यादि लेकर यह व्यवस्था कर ली थी और वह स्वयं को संसद के बंधन से मुक्त करा सकता था। पुनश्च, सिंहासन के अन्य दावेदारों को समाप्त करने के पश्चात देश पर उसका नियन्त्रण भी अधिक दृढ़ हो गया था।

हेनरी का संसद की विधान सभा पर उतना ही कठोर नियन्त्रण था जितना कि अर्थ व्यवस्था पर। अधिकांश कानून संसद में आरम्भ होने की अपेक्षा बादशाह से उत्पन्न होते थे। इन कानूनों का मसविदा बादशाह द्वारा नियुक्त न्यायाधीश, संसद में भेजने से पहले बना लेते थे तथा बहुत बार संसद में विवाद के समय भी बादशाह स्वयं मसविदे में संशोधन कर देता था। देश में कोई विधि-निर्माण की समुचित व्यवस्था न होने के कारण बादशाह कानून बनाने में हस्तक्षेप करता रहता था। बादशाह की स्वीकृति प्राप्त करने से पूर्व किसी

Scanned with CamScanner

भी कानून के मसविदे को संसद में एक बार अथवा अनेक बार पढ़ा जाय, इसको कोई निश्चित नियम नहीं था।

अपने शासन के प्रथम वर्षों में हेनरी अष्टम ने संसद के अनेक अधिवेशन बुलाए किन्तु वूल्जे के उत्थान से लेकर 1529 में उसके पतन तक संसद के बिना ही शासन चलाने के प्रयत्न किए गए। केवल 1523 ई० में संसद बुलाई गयी किन्तु वूल्जे के प्रस्तावों के अनुसार अनुदान न देने के कारण इसे भंग कर दिया गया। 1529 ई० में वूल्जे के पतन के पश्चात् सुधारवादी संसद बुलाई गई जिसने 7 वर्ष तक (1529-1536) कार्यभार सम्भाला। यह घटना संसद के इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। एक संस्था जिसे नगण्य मानकर महत्वहीन समझा जाता था, वह सहसा अत्यन्त महत्वपूर्ण बन गई। संसद के सहयोग और अनुमति से रोम और इंग्लैण्ड के चर्च का परस्पर सम्बन्ध तोड़ा जा सका। इसी संसद ने 'Act of Supremacy', 'Act of Appeals', 'Act of Uniformity' और 'Act of Annates' इत्यादि कानून बनाये थे। देश के शासन तथा चर्च की व्यवस्थाओं में परिवर्तन लाने के लिए जिस प्रकार संसद का साधन के रूप में प्रयोग किया गया उससे संसद सदस्य अपनी सदस्यता को बहुत महत्व देने लगे। इसी अवधि में संसद के प्रति प्राचीन व्यवहार में परिवर्तन हुआ। संसद की सदस्यता को बहुत आकांक्षित-सम्मानित पद माना जाने लगा।

Scanned with CamScanner